Handicrafts of India

Geographical Indication (GI) Registered Handicraft Products

A Geographical Indication (GI) is a name or sign used on certain products which corresponds to a specific geographical location or origin (e.g. a town, region, or country). India, as a member of the World Trade Organization (WTO), enacted the Geographical Indication of Goods (Registration and Protection) Act, 1999 with effect from 15 September 2003. The GI tag ensures that none other than those registered as authorised users (or at least those residing inside the geographic territory) are allowed to use the popular product name. Darjeeling tea became the first GI tagged product in India, in 2004-05, since then by May 2017, 295 other GI tagged products have been added to the list.

Department of Posts is releasing a set of Commemorative Postage Stamps on GI Registered Handicraft Products as follows:

GI Registered Handicraft Products:

Blue Pottery of Jaipur: The Art of blue pottery came to Jaipur from Persia and Afghanistan in the 14th century. The use of blue glaze on pottery made from Multani Mitti, or Fuller's earth, is an imported technique, first developed by enterprising Mongol artisans who combined Chinese glazing technology with Persian decorative arts. Man Singh-I was the first to bring the art of blue and white to Jaipur subsequent to his interactions with the Mughals through his campaign in Afghanistan. Blue Pottery has unique features as the pottery is completely hand painted, does not develop cracks and is impervious, hygienic and suitable for daily use.

Karnataka Bronzeware: In Karnataka, bronze casting flourished under Chalukyas, Rastrakutas, Hoysalas and the Vijayanagara period. The Hoysala king Vishnuvardhana under Vaishnava faith, erected many magnificent temples with exquisite metal icons. Bangalore, the capital city of Karnataka, is the chief craft cluster for Bronze Casting. Traditional Indian bronzeware has worldwide reputation in overseas market because of its superior workmanship and modest price. Indian bronzes find place in museums at Boston, New York, Paris, London, Berlin etc. The artisans engaged in making bronze icons known as 'Stapathies' are bound by faith, tradition and religion for making bronze icons and should be well versed in 'dhynanaslokas', which gives the physical attributes to the deity. The traditional crafts persons were an unbroken chain of evolution passing from teacher to the disciple and father to son.

Kutch Embroidery: The Kutch Embroidery originated in Kutch-Gujarat with the arrival of different communities that migrated from countries like Iran, Iraq, Greece, Germany, Afghanistan during 16th & 17th centuries. Kutch embroidery is basically practised by women. Kutch work is unique in the sense that a net is woven on a cloth using thread. The net is then filled in using the same thread by intricate interlocking stitches. The patterns are usually built around geometric shapes. Designs of Kutch Embroidery are inspired by legend and everyday life. Each

individual community expresses its own identity through a sense of aesthetics, colour, layout and motif preferences that evolved out of specific aspects of their history, including migration patterns and contact with surrounding people. However, the different adornment traditions are unified by regional styles and by motifs that bridge cultures: peacocks, parrots, temples, flowers, camels and elephants, human figures in dancing poses, dancing peacocks. It's a tradition which is handed down from generation to generation (mothers to daughters), thereby skilling and empowering them.

Maddalam of Palakkad: Maddalam is considered a divine instrument on account of its inclusion as a major accompaniment in the dance of Shiva. Maddalam dates back to 13th century. The sound produced by Maddalam is considered to be Pranavam or the sound of 'Om' or 'Aum'. It is very similar to the mridangam. The maddalam is the classical drum of South India and is used as an accompaniment for vocal, instrumental and dance performances. Panchavadyam which is regarded as one of the most sophisticated art forms of Kerala is an ensemble of five percussion instruments viz. drums timila, maddalam, edaykka, the cymbals ilathalam and the kombu horn. Cylindrical in shape, maddalam till today is chiselled out of a single piece of jack wood. There are two varieties of maddalam- Suddha maddalam and Toppi maddalam. The former is tied around the waist of the drummer with a cloth while the latter is a smaller version suspended from the neck.

Sikki Grass Products of Bihar: Sikki, the golden grass of Bihar, is found growing in the wet and marshy area of Madhubani district. Sikki work is practised by women in the region of Bihar. There is growing demand for Sikki Grass work not only for outstanding beauty but also for its cultural value. At one point of time, a very large part of the population in North Bihar (i.e. pockets in Darbhanga, Madhubani and Sitamarhi districts of Bihar) was engaged in this craft. The sikki is characterized by its wonderful golden hue, is also coloured into myriad shades to make the products more attractive. The products made from sikki grass are as utilitarian as they are uniquely ornamental. They include containers to store grain, rice, and lentils; boxes to keep clothes and jewellery, baskets to store sweets and masalas (spices) etc.

Department of Posts is pleased to issue a set of five Commemorative Postage Stamps on Geographical Indication (GI) Registered Handicraft Products.

Credits:

Text	: Based on information received from Ministry of Textiles
Stamps/ Miniature Sheet/ FDC/ Brochure / Cancellation Cachet	: Shri Kamleshwar Singh

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

भारतीय हस्तशिल्प

Handicrafts of India

भौगोलिक उपदर्शन (जी आई) पंजीकृत हस्तशिल्प उत्पाद

Geographical Indication (GI) Registered Handicraft Product

विवरणिका BROCHURE

भारतीय हस्तशिल्प

भौगोलिक उपदर्शन (जी आई) पंजीकृत हस्तशिल्प उत्पाद

भौगोलिक उपदर्शन (जीआई) कुछेक उत्पादों पर अंकित नाम अथवा चिह्न है। यह चिह्न किसी भौगोलिक-विशेष स्थान अथवा मूल स्थान (उदाहरण के लिए कोई कस्बा, क्षेत्र अथवा देश) को दर्शाता है। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) का सदस्य होने के नाते भारत ने वस्तुओं का भौगोलिक उपदर्शन (पंजीकरण एवं संरक्षण) अधिनियम, 1999 बनाया, जोकि 15 सितंबर, 2003 को लागू हुआ। जीआई टैग यह सुनिश्चित करता है कि अधिकृत प्रयोक्ता के रूप में पंजीकृत पक्षों के अतिरिक्त कोई अन्य (या कम से कम भौगोलिक क्षेत्र-विशेष के निवासी), संबंधित लोकप्रिय उत्पाद के नाम का इस्तेमाल न कर सके। दार्जीलिंग चाय, 2004-05 में जीआई टैग प्राप्त करने वाला भारत का पहला उत्पाद बना। इसके बाद से मई, 2017 तक 295 अन्य उत्पादों को जीआई टैग सूची में शामिल किया गया है।

डाक विभाग जीआई पंजीकृत हस्तशिल्प उत्पादों पर डाक-टिकटों का एक सेट जारी कर रहा है। इन उत्पादों का विवरण निम्नानुसार है :-

भौगोलिक उपदर्शन (जीआई) पंजीकृत हस्तशिल्प उत्पाद :

जयपुरी ब्लू पॉटरी: ब्लू पॉटरी की कला 14वीं सदी में फारस और अफगानिस्तान से जयपुर में आई। मुल्तानी मिट्टी अथवा फुलर्स अर्थ से बनी पॉटरी पर नीले चमकदार रोगन का प्रयोग एक आयातित तकनीक है, जो सर्वप्रथम उद्यमशील मंगोली कारीगरों द्वारा विकसित की गई, जिन्होंने चीनी चमकदार रोगन तकनीक का फारसी सजावटी कला के साथ प्रयोग किया। मानसिंह प्रथम, अफगानिस्तान में अपने अभियान के दौरान मुगलों के साथ हुए अपने पारस्परिक संवाद के पश्चात जयपुर में नीली एवं सफेद कला को लाने वाले प्रथम राजा थे। ब्लू पॉटरी की अपनी अनूठी विशेषताएं हैं – जैसे इसे पूर्णतः हाथ से रंगा जाता है, इसमें दरारें नहीं पड़ती और यह दैनिक उपयोग की दृष्टि से जल प्रतिरोधक, स्वच्छ और उपयुक्त है।

कर्नाटक कांस्य हस्तशिल्प: कर्नाटक में, कांस्य ढलाई चालुक्य, राष्ट्रकूट, होयसाल और विजयनगर काल के दौरान समृद्ध हुई। होयसाल राजा विष्णुवर्धन ने वैष्णव मत अपनाने के बाद, उत्कृष्ट धातु प्रतिमाओं के साथ कई भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। कर्नाटक की राजधानी, बेंगलुरु, कांस्य-ढलाई का मुख्य शिल्प कलस्टर है। परम्परागत भारतीय कांस्य हस्तशिल्प अपनी उत्कृष्ट कारीगरी और कम कीमतों की वजह से दुनिया भर के विदेशी बाजारों में लोकप्रिय है। भारतीय कांस्य की कलाकृतियों को बोस्टन, न्यूयॉर्क, पेरिस, लंदन, बर्लिन इत्यादि के संग्रहालय में स्थान दिया गया है। कांस्य की प्रतिमाएं बनाने में लगे शिल्पकारों को 'स्थापती' के नाम से जाना जाता है और कांस्य प्रतिमाओं को बनाने के लिए वे विश्वास, परम्परा और धर्म से बंधे होते हैं। इन 'स्थापतियों' का 'ध्यान-श्लोकों' से भली-भांति परिचित होना आवश्यक है, जिससे वे देवताओं की प्रतिमाओं को उनसे संबंधित विशेषताओं के साथ निर्मित कर सकें। परम्परागत शिल्पकार इस कला के क्रमिक विकास की एक अटूट श्रृंखला थे, जो गुरु से शिष्य और पिता से पुत्र तक पहुंचने की प्रक्रिया से बनती है।

कच्छ कशीदाकारी : कच्छ कशीदाकारी की शुरुआत 16वीं एवं 17वीं शताब्दी के दौरान ईरान, इराक, यूनान, जर्मनी, अफगानिस्तान के विभिन्न समुदायों के आगमन से कच्छ-गुजरात में हुआ। कच्छ कशीदाकारी मूलतः महिलाओं द्वारा की जाती है। कच्छ की कशीदाकारी का अनूठापन इस बात में है कि कपड़े पर धागे का प्रयोग करके जाल तैयार किया जाता है। इसके बाद इस जाल को उसी धागे का प्रयोग कर

महीन इंटरलोकिंग फन्दों से भरा जाता है। ये पैटर्न सामान्यतः ज्यामीतीय आकारों पर बनाए जाते हैं। कच्छ कशीदाकारी के डिजाइन पौराणिक कथाओं और दैनिक जीवन की घटनाओं से प्रेरित होते हैं। इन पैटर्न में, प्रत्येक समुदाय सौन्दर्यभाव, रंग, ले-आउट तथा अपने पसन्दीदा प्रतीकों के माध्यम से अपनी निजी पहचान को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। ये प्रतीक उनके इतिहास के विशिष्ट पहलुओं के साथ विकसित हुए हैं। इनमें प्रवास के तरीके तथा आस-पास के लोगों के साथ मेल-जोल के आयाम भी शामिल हैं। तथापि, अलंकरण की विभिन्न परम्पराओं को क्षेत्रीय शैलियों और प्रतीकों के जरिए एकीकृत किया जाता है। इससे भिन्न संस्कृतियां एक दूसरे के निकट आती हैं। मोर, तोता, मंदिर, पुष्प, ऊंट तथा हाथी, नृत्य की मुद्रा में मनुष्य की आकृतियां, नृत्य करते हुए मोर आदि प्रतीकों के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। यह ऐसी परम्परा है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी (माता से पुत्री को) चली आ रही है। यह कला महिलाओं को कौशलयुक्त और सशक्त बनाती है।

पालक्काड मद्दलम : शिव के नृत्य में प्रमुख संगत के रूप में शामिल किए जाने के कारण मद्दलम को एक दिव्य वाद्य माना जाता है। मद्दलम की उत्पत्ति 13वीं शताब्दी की मानी जाती है। मद्दलम से उत्पन्न ध्वनि प्राणवम या 'ओम' या 'औम' की ध्वनि मानी जाती है। यह ध्वनि मृदंगम से काफी मिलती-जुलती है। मद्दलम दक्षिण भारत का शास्त्रीय ड्रम है और इसका प्रयोग गायन, वाद्य संगीत और नृत्य के प्रदर्शन के दौरान संगत के रूप में किया जाता है। पंचवाद्यम केरल के सर्वाधिक परिष्कृत कला रूपों में से एक है, जिसमें पांच तालवाद्य अर्थात ढोल तिम्मिला, मद्दलम इडेयक्का, सिम्बल इलाथलम तथा कोम्बुहॉर्न शामिल हैं, बेलनाकार आकृति के मद्दलम को आज भी जैक लकड़ी के एकल टुकड़े को तराश कर बनाया जाता है। मद्दलम दो प्रकार का होता है- सुधा मद्दलम और टोप्पी मद्दलम। पहले को ड्रमर की कमर से कपड़े की सहायता से बांधा जाता है, जबकि दूसरे को गर्दन से लटकाया जाता है। यह आकार में छोटा होता है।

बिहार के सिक्की घास उत्पाद : बिहार की सुनहरी घास, सिक्की मधुबनी जिले के नम और दलदली क्षेत्र में पाई जाती है। सिक्की घास के उत्पाद बिहार क्षेत्र में महिलाओं द्वारा बनाए जाते हैं। सिक्की घास के उत्पादों की मांग में बढ़ोत्तरी का कारण न केवल इनकी कलात्मक सुंदरता है, बल्कि इनका सांस्कृतिक महत्व भी है। एक समय था, जब उत्तरी बिहार (अर्थात बिहार के दरभंगा, मधुबनी तथा सीतामढ़ी जिले के क्षेत्र) में बड़ी संख्या में लोग शिल्प के इस कार्य में लगे हुए थे। सुनहरा रंग सिक्की घास की विशेषता है। अन्य अनेक रंगों में रंग कर इसके उत्पादों को और अधिक आकर्षक बनाया जाता है। सिक्की घास से बने उत्पाद उपयोगी होने के साथ-साथ देखने में सुन्दर भी होते हैं। इनमें अनाज, चावल और दालें रखने के बर्तन, कपड़े और आभूषण रखने के बक्से, मिठाई और मसाले रखने की टोकरी आदि शामिल हैं।

डाक विभाग, भौगोलिक उपदर्शन (जीआई) पंजीकृत हथकरघा उत्पादों पर पांच स्मारक डाक-टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

पाठ	: वस्त्र मंत्रालय से प्राप्त सूचना पर आधारित
डाक-टिकट/ मिनियेचर शीट/ प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/ विरूपण मोहर	: श्री कमलेश्वर सिंह

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: 500 पैसा(5) : 500 p (5)
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	: 606000 प्रत्येक : 606000 each
मुद्रित मिनियेचर शीटें Stamps Printed	: 110750 : 110750
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट : Wet Offset
मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद : Security Printing Press, Hyderabad
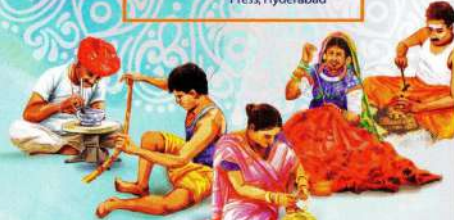
For more information visit:
http://www.epostoffice.gov.in

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य : ₹5.00